समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Wednesday, 26 August 2026

कच्चे तेल से नहीं, अब 'सुपर अल नीनो' से डरेगा शेयर बाजार! कमजोर मानसून ने बढ़ाई निवेशकों की चिंता

Sanket Morankar

Published on 30 Jun 2026

भारतीय शेयर बाजार के सामने अब सबसे बड़ा खतरा कच्चे तेल की कीमतें नहीं, बल्कि आसमान से बरसने वाला मौसम बनता दिखाई दे रहा है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में ब्रेंट क्रूड की कीमतें वर्ष 2026 के उच्चतम स्तर 120 डॉलर प्रति बैरल से करीब 40 प्रतिशत तक गिर चुकी हैं, लेकिन इसके बावजूद भारतीय शेयर बाजार में उम्मीद के मुताबिक तेजी देखने को नहीं मिली।

बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि इसकी सबसे बड़ी वजह तेजी से विकसित हो रहा "**सुपर अल नीनो**" है, जिसने इस साल मानसून की शुरुआत को पिछले एक दशक का सबसे कमजोर बना दिया है। यदि आने वाले महीनों में बारिश सामान्य से कम रहती है तो इसका सीधा असर ग्रामीण अर्थव्यवस्था, घरेलू मांग, कृषि उत्पादन और शेयर बाजार पर पड़ सकता है।

दो वर्षों से सीमित दायरे में फंसा बाजार

देश का प्रमुख शेयर सूचकांक **निफ्टी-50** पिछले दो वर्षों से लगभग स्थिर बना हुआ है। इस दौरान निवेशकों को बहुत सीमित रिटर्न मिला है।

बाजार विश्लेषकों का कहना है कि पहले निवेशकों की सबसे बड़ी चिंता कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें थीं, लेकिन अब स्थिति बदल चुकी है। तेल सस्ता होने से राहत जरूर मिली है, लेकिन घरेलू मांग कमजोर होने का खतरा कहीं अधिक बड़ा बन गया है।

विशेषज्ञों का मानना है कि यदि ग्रामीण आय प्रभावित होती है तो उपभोक्ता खर्च घटेगा, जिसका असर FMCG, ऑटोमोबाइल, ट्रैक्टर, उपभोक्ता वस्तुओं और रिटेल सेक्टर पर दिखाई देगा।

कमजोर मानसून ने बढ़ाई चिंता

भारतीय मौसम विभाग (IMD) के आंकड़ों के अनुसार **26 जून 2026 तक देश मे सामान्य औसत (LTA) की तुलना मे 42**

प्रतिशत कम बारिश दर्ज की गई है। यह पिछले दस वर्षों में मानसून की सबसे कमजोर शुरुआत मानी जा रही है।

देश के लगभग **72 प्रतिशत हिस्से** में सामान्य से कम वर्षा हुई है।

क्षेत्रवार स्थिति इस प्रकार है—

- मध्य भारत – 57% कम बारिश
- पूर्वी एवं उत्तर-पूर्वी भारत – 43% कम
- दक्षिण भारत – 30% कम
- उत्तर एवं पश्चिम भारत – 24% कम

विशेषज्ञों के अनुसार यह स्थिति 2019 और 2023 जैसे अल नीनो वर्षों से भी अधिक गंभीर है।

IMD ने घटाया मानसून का अनुमान

भारतीय मौसम विभाग ने इस वर्ष मानसून का अनुमान घटाकर **दीर्घकालिक औसत (LPA) का 90 प्रतिशत** कर दिया है। साथ ही सामान्य से कम बारिश होने की संभावना लगभग **60 प्रतिशत** बताई गई है।

यदि यह अनुमान सही साबित होता है तो खरीफ फसलों पर गंभीर असर पड़ सकता है। भारत के कुल खाद्यान्न उत्पादन का लगभग आधा हिस्सा खरीफ फसलों से आता है और देश की करीब 46 प्रतिशत आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है।

ऐसे में कमजोर मानसून केवल खेती तक सीमित समस्या नहीं रहेगा, बल्कि पूरी अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकता है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर बढ़ेगा दबाव

पिछले दो वर्षों में ग्रामीण अर्थव्यवस्था भारतीय विकास की बड़ी ताकत बनी हुई थी। बेहतर कृषि आय, ट्रैक्टरों की मजबूत बिक्री और ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती खपत ने कई कंपनियों के कारोबार को मजबूती दी थी।

लेकिन अब हालात बदलते नजर आ रहे हैं।

विशेषज्ञों का कहना है कि कमजोर मानसून के साथ-साथ उर्वरकों की बढ़ती कीमतें और कर्ज महंगा होने से किसानों की आय प्रभावित हो सकती है। यदि ऐसा हुआ तो ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोक्ता खर्च घटेगा और इसका सीधा असर कंपनियों की बिक्री पर पड़ेगा।

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के हालिया सर्वेक्षण भी संकेत दे रहे हैं कि शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में उपभोक्ता विश्वास कमजोर पड़ रहा है।

FMCG कंपनियों पर सबसे बड़ा असर

ब्रोकरेज हाउसों ने पहले ही उपभोक्ता आधारित सेक्टरों को लेकर सतर्क रुख अपनाना शुरू कर दिया है।

विशेषज्ञों का कहना है कि यदि ग्रामीण मांग घटती है तो सबसे अधिक दबाव **FMCG कंपनियों** पर पड़ेगा। इसके अलावा ट्रैक्टर, कृषि उपकरण, टू-व्हीलर और उपभोक्ता उत्पाद बनाने वाली कंपनियों के शेयरों में भी कमजोरी देखने को मिल सकती है।

कुछ ब्रोकरेज कंपनियों ने उपभोक्ता क्षेत्र में अपनी निवेश हिस्सेदारी कम करने की सलाह भी दी है।

सरकार पर भी बढ़ सकता है वित्तीय दबाव

कमजोर मानसून केवल बाजार ही नहीं, बल्कि सरकार की वित्तीय स्थिति को भी प्रभावित कर सकता है।

यदि कई राज्यों में सूखे जैसी स्थिति बनती है तो केंद्र और राज्य सरकारों को—

- मनरेगा जैसी योजनाओं पर अधिक खर्च करना पड़ेगा।

- किसानों को राहत पैकेज देना पड़ सकता है।
- खाद्यान्न वितरण और सब्सिडी का बोझ बढ़ सकता है।

इससे राजकोषीय दबाव बढ़ने की आशंका भी जताई जा रही है।

विदेशी निवेशकों की भूमिका भी अहम

बाजार विशेषज्ञों का कहना है कि भारतीय शेयर बाजार में नई तेजी तभी संभव होगी जब विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (FPI) की बिकवाली कम होगी।

विशेष रूप से बैंकिंग और आईटी सेक्टर में विदेशी निवेशकों की हिस्सेदारी काफी अधिक है। यदि वैश्विक निवेशक भारतीय बाजार में दोबारा निवेश बढ़ाते हैं तो बाजार को सहारा मिल सकता है।

हालांकि फिलहाल निवेशकों की नजर मानसून की प्रगति और अल नीनो की स्थिति पर टिकी हुई है।

क्या पूरी तरह संकट में है भारतीय अर्थव्यवस्था ?

हालांकि सभी विशेषज्ञ बेहद निराशाजनक तस्वीर पेश नहीं कर रहे हैं।

कुछ रेटिंग एजेंसियों का मानना है कि भारत पहले की तुलना में बेहतर स्थिति में है क्योंकि—

- सिंचाई सुविधाओं का विस्तार हुआ है।
- जलाशयों में पर्याप्त पानी उपलब्ध है।
- गेहूं और चावल का सरकारी बफर स्टॉक मजबूत है।
- ग्रामीण अर्थव्यवस्था अब केवल खेती पर निर्भर नहीं रह गई है।
- पशुपालन और मत्स्य पालन जैसे क्षेत्रों का योगदान लगातार बढ़ रहा है।

इसके अलावा मौसम विशेषज्ञों का अनुमान है कि “सुपर अल नीनो” का पूरा प्रभाव वर्ष के अंतिम महीनों में देखने को मिल सकता है, जिससे मुख्य मानसून सीजन पर इसका असर कुछ हद तक सीमित भी रह सकता है।

निवेशकों के लिए क्या संकेत ?

बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि फिलहाल भारतीय शेयर बाजार की दिशा काफी हद तक मानसून पर निर्भर करेगी। कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट से मिलने वाला फायदा लगभग बाजार में समाहित हो चुका है। अब यदि मानसून सामान्य रहता है तो बाजार को नई ऊर्जा मिल सकती है, लेकिन बारिश में बड़ी कमी घरेलू मांग और कॉरपोरेट मुनाफे पर दबाव बढ़ाकर शेयर बाजार की तेजी को रोक सकती है।

आने वाले कुछ सप्ताह निवेशकों, कंपनियों और नीति-निर्माताओं सभी के लिए बेहद महत्वपूर्ण रहने वाले हैं, क्योंकि इस बार बाजार की नजरें तेल की कीमतों पर नहीं, बल्कि आसमान से बरसने वाली बारिश पर टिकी हुई हैं।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Sanket Morankar, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.